भारत के 10 गणेश मंदिरों में गणेशोत्सव की रोचक और सांस्कृतिक परंपराएँ

27 **अगस्त, 2025** से पूरे भारत में श्रद्धा और उल्लास के साथ **'श्री गणेश चतुर्थी उत्सव'** धूमधाम से आरंभ हुआ।

यह रिपोर्ट, भारत के उन **10 प्रमुख गणेश मंदिरों** पर आधारित है, जहाँ गणेशोत्सव के विशेष अवसर पर भगवान गणपति के लिए समर्पित भव्य उत्सव और धार्मिक कार्यक्रम-अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं।

क्रमांक	विवरण	चित्र / स्रोत
1.	**सिद्धिविनायक मंदिर में होता है दस दिवसीय गणेशोत्सव** **स्थान:** मुंबई **मंदिर: सिद्धिविनायक मंदिर** ❖ **विवरण** : सिद्धिविनायक रूप में समर्पित गणेश मंदिर की स्थापना 1801 में हुई थी। गणेश महोत्सव के दौरान, **सिद्धिविनायक प्रतिमा को स्वर्ण आभूषणों, बारीक अलंकरणों** और **ताज़े फूलों की मालाओं** से सुसज्जित किया जाता है। भक्त प्रतिमा पर मोदक, फल और फूल अर्पित कर भगवान से आशीर्वाद मांगते हैं। **दस दिनों** तक चलने वाला यह गणेश उत्सव **भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी** से प्रारंभ होकर **अनंत चतुर्दशी** पर संपन्न होता है। ❖ सिद्धिविनायक मंदिर में गणेश जी की मूर्ति की **सूंड दाईं** ओर मुड़ी हुई है, जो इसे अन्य गणेश मंदिरों से विशिष्ट बनाती है। मान्यता है कि दाईं ओर मुड़ी हुई सूंड सिद्धि का प्रतीक है, इसलिए इसे **'सिद्धिविनायक'** कहा जाता है।	 AajTak FreePressJournal
2.	**दगडूशेठ हलवाई गणेश मंदिर में प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है सामूहिक अथर्वशीर्ष पाठ** **स्थान:** पुणे, महाराष्ट्र **मंदिर: श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणेश मंदिर** ❖ **विवरण** : पुणे के प्रसिद्ध **श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणेश मंदिर** में भगवान गणेश की 7.5 फीट ऊँची और 4 फीट चौड़ी **स्वर्ण एवं रत्नजड़ित प्रतिमा** वर्ष 1893 में स्थापित की गई। गणेश महोत्सव के दौरान इस भव्य प्रतिमा को **हर वर्ष सोने, हीरे** और **रत्नों** से सजाया जाता है तथा पूरे मंदिर परिसर को फूलों और रंगीन रोशनी से अलंकृत किया जाता है। ❖ **10 दिवसीय गणेश उत्सव** में, हर साल दूसरे दिन पारंपरिक परिधान धारण किए **हजारों महिलाएँ** सुबह-सुबह पंडाल में एकत्र होकर इस अनुष्ठान का हिस्सा बनती हैं और सामूहिक रूप से संस्कृत पाठ ***'अथर्वशीर्ष'*** का जाप करती हैं।	 herzindagi AmarUjala

3.	**मोती डूंगरी गणेश मंदिर में होता है गणेश जी का विशेष मेहंदी पूजन** **स्थान:** जयपुर, राजस्थान **मंदिर: मोती डूंगरी गणेश मंदिर** ❖ **विवरण :** भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष चतुर्थी पर **नौ दिवसीय भगवान श्री गणेशजी महाराज का जन्मोत्सव** अत्यंत भव्य रूप से मनाया जाता है। इस अवसर पर भगवान गणेश को **चांदी** के सिंहासन पर **विशेष श्रृंगार** के साथ विराजमान किया जाता है। गणेश उत्सव के दौरान भगवान गणेश को **स्वर्ण मुकुट, नौलखा हार** पहनाया जाता है और **पंचामृत अभिषेक** किया जाता है। भक्तगण भगवान को **विशाल लड्डू (250 किलो तक)** अर्पित करते हैं। ❖ मंदिर परिसर में आकर्षक झांकियां सजाई जाती हैं और शोभायात्रा का आयोजन होता है। इस दिन भगवान गणेश का **विशेष मेहंदी पूजन** किया जाता है। यही **मेहंदी भक्तों** को **प्रसाद रूप** में वितरित की जाती है। मान्यता है कि इस प्रसाद के सेवन या धारण से विवाह में आ रही बाधाएं दूर हो जाती हैं।	 Ndtv HariBhoomi
4.	**गणेशोत्सव पर गढ़ गणेश मंदिर में लगता है विशेष पाँच दिवसीय मेला** **स्थान:** जयपुर, राजस्थान **मंदिर: गढ़ गणेश मंदिर** ❖ **विवरण :** जयपुर का प्राचीन गढ़ गणेश मंदिर 18वीं शताब्दी में महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित कराया गया था। यहाँ भगवान गणेश की **बालरूप प्रतिमा विराजमान** है, जो **बिना सूंड** के स्वरूप में स्थापित है। ❖ गणेश चतुर्थी के दौरान हर साल **पाँच दिवसीय मेला** आयोजित किया जाता है, जहाँ भक्तों को मंदिर तक पहुँचने के लिए 365 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं, जिन्हें वर्ष के 365 दिनों का प्रतीक माना जाता है। श्रद्धालुओं के लिए यह चढ़ाई एक प्रकार की भक्ति यात्रा समझी जाती है। गणेश उत्सव के अवसर पर **दीपयात्रा, विशेष रात्रि जागरण** और **भव्य सजावट** का आयोजन होता है। भक्तों का विश्वास है कि यहाँ दर्शन करने से मानसिक शांति, सुकून और सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है।	 MpBreakingNews Dainik Bhaskar

<table>
<tr>
<td>5.</td>
<td>

एक महीने से अधिक समय तक चलता मयूरेश्वर मंदिर में भव्य गणेशोत्सव

स्थान: मोरगांव, पुणे (महाराष्ट्र)
मंदिर: श्री मयूरेश्वर मंदिर

❖ विवरण : मयूरेश्वर (मोरेश्वर) मंदिर महाराष्ट्र के अष्टविनायक मंदिरों में से एक है। यह मंदिर अपने भव्य गणेशोत्सव उत्सव के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का उत्सव एक महीने से अधिक समय तक चलता है, जिसमें पास के चिंचवाड़ स्थित मंगलमूर्ति मंदिर से गणेश जी की पालकी के साथ आने वाला विशेष जुलूस भी शामिल होता है।

❖ गणेश चतुर्थी के अवसर पर भक्त बड़ी संख्या में मोरेश्वर मंदिर पहुँचते हैं। पालकी यात्रा के साथ-साथ विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, मेले और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यह उत्सव आश्विन शुक्ल दशमी (आश्विन माह का 10वाँ चंद्र दिवस) तक चलता है।

</td>
<td>

Dainik Bhaskar
Smartpuja

</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>

गणेश चतुर्थी पर विनायक मंदिर में होता है 20 दिनों तक भव्य ब्रह्मोत्सव का आयोजन

स्थान: चित्तूर, आंध्रप्रदेश
मंदिर: श्री कनिपाकम वरसिद्धि विनायक मंदिर

❖ विवरण : श्री कनिपाकम वरसिद्धि विनायक मंदिर को "पानी के देवता का मंदिर" भी कहा जाता है। मान्यता है कि यहाँ भगवान गणेश की स्वयंभू मूर्ति निरंतर आकार में बढ़ रही है। पवित्र कुएँ का जल कभी सूखता नहीं और इसे तीर्थ के रूप में भक्तों को अर्पित किया जाता है।

❖ गणेश चतुर्थी के अवसर पर इस मंदिर में 20 दिनों तक भव्य ब्रह्मोत्सव का आयोजन किया जाता है। परंपरा के अनुसार, इस उत्सव की शुरुआत स्वयं ब्रह्मदेव ने की थी। ब्रह्मोत्सव के दौरान प्रतिदिन सुबह और शाम रथयात्रा निकाली जाती है, जिसमें भगवान गणेश विभिन्न वाहनों पर सवार होकर भक्तों को दर्शन देते हैं। इन रथों को रंग-बिरंगे वस्त्रों और आकर्षक सजावट से अलंकृत किया जाता है।

</td>
<td>

Dainik Bhaskar
Herzindagi

</td>
</tr>
</table>

<table>
<tr>
<td>7.</td>
<td>
श्री मनाकुला विनायक मंदिर में 24 दिनों तक मनाया जाता है ब्रह्मोत्सवम

स्थान: पुडुचेरी
मंदिर: श्री मनाकुला विनायक मंदिर

❖ विवरण : श्री मनाकुला विनायक मंदिर अपनी चमत्कारी गणेश प्रतिमा और प्राचीन इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ भगवान गणेश के 16 रूपों का चित्रण किया गया है तथा दीवारों पर उनके जन्म से विवाह तक की कथाओं का अद्भुत शिल्पांकन किया गया है। लगभग 8,000 वर्ग फुट में फैले इस मंदिर की आंतरिक सज्जा सोने से अलंकृत है और इसमें गणेश जी की 58 विविध प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

❖ गणेश चतुर्थी के अवसर पर इस मंदिर में पारंपरिक दक्षिण भारतीय वैदिक अनुष्ठान, मंत्रोच्चार और विशेष पूजा-अर्चना के साथ भव्य उत्सव मनाया जाता है। अगस्त-सितंबर में यहाँ 24 दिनों तक ब्रह्मोत्सवम मनाया जाता है, जिसमें विशेष रथयात्रा का आयोजन होता है। सोने से सजे रथ पर भगवान गणेश नगर भ्रमण कर भक्तों को दर्शन देते हैं। इस दौरान वैदिक मंत्रों का जाप, सामूहिक प्रार्थनाएँ और भगवान गणेश को समर्पित विशेष पूजाएँ आयोजित की जाती हैं।
</td>
<td>

Dainik Bhaskar
Opindia
</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>
कोइल गणपति मंदिर में गणेश चतुर्थी पर सात दिनों तक मनाया जाता है विशेष पर्व

स्थान: तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु
मंदिर: उच्ची पिल्लयार कोइल गणपति मंदिर

❖ विवरण : देश के प्राचीनतम मंदिरों में से एक, उच्ची पिल्लयार कोइल मंदिर तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में 272 फीट ऊँची चट्टान पर स्थित है। मान्यता है कि यहाँ भगवान गणेश ने स्वयं भगवान रंगनाथ की मूर्ति स्थापित की थी।

❖ मंदिर में गणेश चतुर्थी का उत्सव सात दिनों तक बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। तमिलनाडु में इस पर्व को विनयगर चतुर्थी कहा जाता है। मुख्य उत्सव के दौरान मंदिरों में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयोजन, विशेष आरती, मंत्रोच्चार तथा सार्वजनिक प्रार्थनाएँ संपन्न होती हैं, साथ ही, गणेश जी की विशाल प्रतिमाएँ स्थापित कर श्रद्धा और भक्ति के साथ उनका पूजन किया जाता है।
</td>
<td>

Jagran
News18
</td>
</tr>
</table>

9.	**रणथंभौर किले में गणेश चतुर्थी पर तीन दिवसीय लक्खी मेले का होता है आयोजन** **स्थान:** सवाई माधोपुर, राजस्थान **मंदिर: श्री त्रिनेत्र गणेश मंदिर** ❖ **विवरण :** रणथंभौर किले में स्थित 700 वर्ष पुराना **त्रिनेत्र गणेश मंदिर** अद्वितीय है, क्योंकि यहाँ **भगवान गणेश** अपने परिवार **पत्नी रिद्धि-सिद्धि** और **पुत्र शुभ-लाभ** के साथ विराजमान हैं। मंदिर में भगवान गणेश का "त्रिनेत्र" स्वरूप स्थापित है, जो ज्ञान, दिव्य दृष्टि और विघ्नों को दूर करने की शक्ति का प्रतीक माना जाता है। ❖ प्रत्येक वर्ष गणेश चतुर्थी पर यहाँ **तीन दिवसीय लक्खी मेले** का आयोजन होता है। इस दौरान लाखों भक्त 14 किमी की पैदल यात्रा कर गणेश जी के दर्शन हेतु पहुँचते हैं। पूरे किले की वादियाँ **गणेश जयकारों** से गूंज उठती हैं। गणेश चतुर्थी के अवसर पर **मंदिर में विशेष श्रृंगार, महाआरती, नि:शुल्क भंडारे** और **सांस्कृतिक कार्यक्रम** आयोजित किए जाते हैं।	 Good News Today AmarUjala
10.	**गणेशोत्सव पर इडागुंजी महागणपति मंदिर में महिलाएँ रखती हैं मंगला गौरी व्रत** **स्थान:** गोकर्ण, कर्नाटक **मंदिर: श्री इडागुंजी महागणपति मंदिर** ❖ **विवरण :** प्राचीन शैव ग्रंथों से जुड़े श्री इडागुंजी महागणपति मंदिर का इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण है। यहाँ भगवान गणेश की कमल और मोदक धारण किए खड़ी मूर्ति भक्तों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। ❖ गणेशोत्सव की शुरुआत **गौरी पूजा** से होती है, जहाँ आज भी पूजा परंपराएँ प्राचीन शैली में सम्पन्न की जाती हैं। महिलाएँ समृद्ध जीवन के लिए **'मंगला गौरी व्रत'** रखती हैं। इसके बाद घरों और पंडालों में गणेश प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं। इस अवसर पर सामूहिक भजन, नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। कर्नाटक का सबसे बड़ा **गणेश जुलूस** भी श्री इडागुंजी महागणपति मंदिर से ही निकलता है।	 Herzindag Jagran